विचार बिन्दु

व्यवसाय समय का यन्त्र है। –नेपोलियन

अमेरिकी डॉलर की प्रभुता और भारत की राह

जैसी कि उम्मीद थी भारत ने नई दिल्ली में हुए समिट में ब्रिक्स देशों को अमरीकी डॉलर की प्रभुता से निकालने के उपाय करने के लिये सबको एक मत करने की तरफ किंचित प्रगति की। हालांकि किसी ऐसे सिंगल पेमेंट नेटवर्क बनाने की बात तो नहीं हुई जिसे अमरीकी डॉलर या पश्चिमी देशों के दबदबे वाले स्विफ्ट सिस्टम के विकल्प के तौर पर अपनाया जा सके। मगर उसमें उभरते बाज़ारों और विकासशील देशों में विकास और ढांचागत परियोजनाओं की फाइनेंसिंग में ब्रिक्स देशों के सामूहिक 'न्यू डेवलपमेंट बैंक' की भूमिका को मज़बूत करने का मन्तव्य घोषणापत्र में शामिल किया गया। भारत, 2026 में ब्रिक्स का चेयरमैन होने के नाते, एक ऐसे पेमेंट सिस्टम पर ज़ोर दे रहा था जिससे सदस्य देश अमरीकी डॉलर या अमेरिकी बैंकों के ज़रिए ट्रांज़ैक्शन किए बिना, सीधे अपनी करेंसी में आपसी ट्रेड सैटल कर सकें। भारत के इस प्रस्ताव के केंद्र में एक टेक्निकल पेमेंट ब्रिज है जो ब्रिक्स देशों के मौजूदा घरेलू पेमेंट सिस्टम को आपस में जोड़ने की व्यवस्था करता है। इस ओर आगे बढ़ने के लिये केंद्र सरकार ने कुछ नीतिगत फैसले लिये हैं तथा भारतीय रिज़र्व बैंक ने इस ओर कुछ कदम भी उठाए हैं। डिस्ट्रिब्यूटेड-लेजर और स्मार्ट-कॉन्ट्रैक्ट-स्टाइल टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करके, प्रतिभागियों के बीच भुगतान की प्रक्रिया लगभग तुरंत पूरी हो सकती है। भारत यह भी स्पष्ट कर चुका है कि उसका मकसद नई ब्रिक्स करेंसी लाना नहीं है। इसके बजाय भारत भुगतान के ऑप्शन बढ़ाना और ट्रांज़ैक्शन के लिए डॉलर पर निर्भरता कम करना चाहता है। ब्रिक्स देशों के समूह इस बात पर राजी हुए हैं कि 'न्यू डेवलपमेंट बैंक' को लोकल करेंसी में फाइनेंसिंग बढ़ाने के लिए बढ़ावा दिया जाना चाहिए। हालांकि ब्रिक्स नेताओं के घोषणापत्र में अमरीकी डॉलर या यूनाइटेड स्टेट्स का कोई सीधा ज़िक्र नहीं था। जटिल होती जा रही विश्व राजनीति में भारत की पहल कितनी सफल होती है यह अभी कहना नामुमकिन है। विश्व अर्थव्यवस्था में अमेरिकी डॉलर की प्रभुता पिछले सात दशकों से निर्विवाद रूप से बनी हुई है। जब भी अंतरराष्ट्रीय व्यापार, विदेशी मुद्रा भंडार, कर्ज़, निवेश अथवा ऊर्जा सौदों की बात आती है, डॉलर सबसे आगे खड़ा दिखाई देता है। यह स्थिति केवल अमरीका की आर्थिक ताक़त के कारण नहीं है, बल्कि ऐतिहासिक घटनाओं, राजनीतिक समझौतों और वैश्विक वित्तीय ढांचे के संयुक्त परिणाम से बनी है। आज जब अमेरिका का साम्राज्यवादी रुख सामने आने लगा है और उसे अनेक मोर्चों पर चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, ऐसे में डॉलर की विश्व अर्थव्यवस्था में प्रभुता ही राष्ट्रपति ट्रम्प के कारनामों में उनकी सबसे बड़ी मददगार साबित हो रही है। इसके अलावा अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग प्रणाली पर भी डॉलर का अप्रत्यक्ष नियंत्रण है। डॉलर की वैश्विक प्रभुता अमेरिका को केवल आर्थिक ही नहीं, बल्कि राजनीतिक और कूटनीतिक शक्ति भी देती है। इसी प्रभुता के कारण अमेरिका किसी भी देश पर आर्थिक प्रतिबंध लगाकर उसकी अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर सकता है, जिसका भरपूर उपयोग वर्तमान अमेरिकी राष्ट्रपति कर रहे हैं।

डॉलर की प्रभुता के ऐतिहासिक कारण रहे हैं। अमरिकी डॉलर को यह विशेष स्थान अचानक नहीं मिला, बल्कि इसके पीछे एक लंबा इतिहास है। द्वितीय विश्व युद्ध ने यूरोप और एशिया को बर्बाद कर दिया था। अमेरिका अपेक्षाकृत मज़बूत स्थिति में था। 1944 में ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में तय हुआ कि अधिकांश विश्व मुद्राएं डॉलर से जुड़ी रहेंगी और डॉलर सोने से जुड़ा रहेगा। इस प्रकार डॉलर एक प्रकार से एंकर करेंसी बन गया। 1971 में अमेरिकी राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने डॉलर का सोने से सीधा संबंध तोड़ दिया। सैद्धांतिक रूप से यह डॉलर की नींव हिलाने वाला निर्णय था, लेकिन व्यवहार में डॉलर की स्थिति और मज़बूत हो गई क्योंकि तब तक पूरा वित्तीय ढांचा डॉलर पर आधारित हो चुका था। 1970 के दशक में अमेरिका और सऊदी अरब के बीच समझौते के तहत तेल निर्यातक देशों ने तय किया कि तेल की कीमत केवल डॉलर में तय होगी। चूँकि ऊर्जा हर अर्थव्यवस्था की धुरी है, इसलिए सभी देशों को डॉलर की ज़रूरत पड़ने लगी। आज भी लगभग 60 प्रतिशत वैश्विक विदेशी मुद्रा भंडार डॉलर में हैं। अंतरराष्ट्रीय व्यापार का 40 प्रतिशत से अधिक हिस्सा डॉलर में होता है, जबकि अमेरिकी अर्थव्यवस्था का वैश्विक जीडीपी में हिस्सा लगभग 25 प्रतिशत है। यह असमानता ही डॉलर के असामान्य प्रभुत्व की ओर इशारा करती है। ऐसे में अमेरिकी वित्तीय संस्थाएं –वॉल स्ट्रीट बैंक, हेज फंड, रेटिंग एजेंसियां –पूरे विश्व में निवेश की दिशा तय करती हैं। संकट की स्थिति में डॉलर और अमेरिकी ट्रेज़री बांड को सुरक्षित ठिकाना माना जाता है। 2008 की वैश्विक मंदी या हाल की कोविड महामारी के समय भी यही देखा गया। किन्तु हाल के वर्षों में भारत सहित कुछ देश डॉलर पर निर्भरता कम करने की कोशिश कर रहे हैं। रूस ने पश्चिमी प्रतिबंधों के कारण चीन और भारत के साथ स्थानीय मुद्राओं में व्यापार शुरू किया। चीन भी अपनी मुद्रा युआन को अंतरराष्ट्रीय मुद्रा बनाने की कोशिश में है और उसने पेट्रो-युआन की दिशा में कदम उठाया है। यूरोपीय संघ भी यूरो को मजबूत वैश्विक विकल्प के रूप में प्रस्तुत करता रहा है। इस पृष्ठभूमि में भारत के प्रयासों को समझना ज़रूरी है। भारत ने रूस, श्रीलंका, मॉरीशस जैसे देशों के साथ रुपये में व्यापार शुरू किया है। आरबीआई ने स्पेशल वोस्ट्रो अकाउंट की व्यवस्था की है, जिससे विदेशी कंपनियां सीधे रुपये में भुगतान स्वीकार कर सकती हैं। भारत ब्राज़ील, रूस, चीन और दक्षिण अफ्रीका के साथ मिलकर भी वैकल्पिक वित्तीय ढांचे पर काम कर रहा है।

भारत दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और तेजी से आगे बढ़ रही है। दक्षिण एशिया और अफ्रीका के कई देशों के लिए भारत एक महत्वपूर्ण व्यापारिक साझेदार है, जहां रुपया धीरे-धीरे स्वीकार्य हो सकता है। डिजिटल भुगतान और फिनटेक के क्षेत्र में भारत की प्रगति अद्वितीय है। यदि इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फैलाया जाता है तो रुपया और डिजिटल रुपया दोनों को बढ़त मिल सकती है। कुछ अर्थशास्त्री सोचते हैं कि किसी प्रकार यदि बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था बन पाती है तो डॉलर की शक्ति धीरे-धीरे सीमित हो सकती है।

भारत ने 2022 में डिजिटल रुपया लॉन्च किया है। साथ ही यूपीआई जैसी तकनीक को सिंगापुर, यूएई, नेपाल आदि देशों में मान्यता मिल चुकी है। यदि यह नेटवर्क विस्तृत होता है तो भारतीय रुपये की स्वीकार्यता बढ़ सकती है। रूस से तेल आयात में भारत ने कई बार रुपये और अन्य मुद्राओं का प्रयोग किया है। खाड़ी देशों के साथ भी स्थानीय मुद्रा व्यापार पर चर्चा चल रही है। हालांकि भारत की पहलें आशाजनक हैं, लेकिन इनके रास्ते में गंभीर चुनौतियां भी हैं। रुपये की सीमित स्वीकार्यता है। भारतीय रुपया अभी पूरी तरह परिवर्तनीय मुद्रा नहीं है। पूंजी खाता नियंत्रणों के कारण विदेशी निवेशक इसे डॉलर जितना सुरक्षित नहीं मानते है जबकि डॉलर की संस्थागत ताकतहै। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक, स्विफ्ट नेटवर्क जैसे संस्थान डॉलर-आधारित हैं। इन्हें बदलना आसान नहीं है। इसके अलावा डॉलर की प्रभुता केवल आर्थिक नहीं, बल्कि अमेरिकी सैन्य और कूटनीतिक शक्ति से भी जुड़ी है। इसीलिए डॉलर से अलग होने के प्रयास कई बार राजनीतिक दबावों में फंस जाते हैं। भारत की आंतरिक आर्थिक चुनौतियों को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता। मुद्रास्फीति नियंत्रण, बैंकिंग सुधार, निर्यात प्रतिस्पर्धा-ये ऐसे क्षेत्र हैं जिन पर काम किए बिना रुपया अंतरराष्ट्रीय विश्वास अर्जित नहीं कर पा सकता। फिर भी तस्वीर पूरी तरह निराशाजनक नहीं है। भारत दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और तेजी से आगे बढ़ रही है। दक्षिण एशिया और अफ्रीका के कई देशों के लिए भारत एक महत्वपूर्ण व्यापारिक साझेदार है, जहां रुपया धीरे-धीरे स्वीकार्य हो सकता है। डिजिटल भुगतान और फिनटेक के क्षेत्र में भारत की प्रगति अद्वितीय है। यदि इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फैलाया जाता है तो रुपया और डिजिटल रुपया दोनों को बढ़त मिल सकती है। कुछ अर्थशास्त्री सोचते हैं कि किसी प्रकार यदि बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था बन पाती है तो डॉलर की शक्ति धीरे-धीरे सीमित हो सकती है। हालांकि इसे अचानक खत्म करना न तो संभव है और न ही व्यावहारिक भी। किंतु यह सच है कि दुनिया के अनेक देशों का रुझान अब धीरे-धीरे बहु-मुद्रा व्यवस्था की ओर बढ़ रहा है।ऐसे में रुपया-आधारित व्यापार, ब्रिक्स सहयोग, डिजिटल रुपया, और यूपीआई का वैश्विक प्रसार के भारत के प्रयास इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकते हैं। फिलहाल ये प्रयास केवल प्रतीकात्मक दिख रहे हैं, लेकिन लंबी अवधि में ये डॉलर के वर्चस्व को बाहर निकालने का रास्ता बना सकते हैं। भारत यदि अपनी अर्थव्यवस्था को मज़बूत बनाए, रुपये को अधिक खुला और स्थिर करे, और अंतरराष्ट्रीय साझेदारियों का दायरा बढ़ाए, तो वह डॉलर की छाया से बाहर निकलकर वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में स्वतंत्र पहचान बना सकता है। इस राह में चुनौतियां कम नहीं हैं, तो संभावनाएं भी कम नहींहैं।

अभी भारत पूरी तरह से अमेरिकी डॉलर की प्रभुता को चुनौती देने की हालत में नहीं है। लेकिन वह उसकी वैश्विक पकड़ को कम करने की दिशा में काम जरूर कर रहा है। इसे आमतौर पर डी डोलेराइज़ेशन कहा जाता है। भारत अब कई देशों के साथ डॉलर की बजाय भारतीय रुपये में व्यापार करने की कोशिश कर रहा है। जैसे रूस के साथ तेल व्यापार में रुपये का इस्तेमाल करना। इससे डॉलर की जरूरत कम होती है। साथ ही यह फायदा होता है कि डॉलर पर निर्भरता घटती है। इससे विदेशी मुद्रा भंडार पर दबाव कम होता है। वास्तव में भारत डॉलर को हटाने की बजाय, अभी उसके बिना भी काम चलाना सीख रहा है। ब्रिक्स के देश दुनिया की लगभग आधी आबादी और ज़रूरी संसाधन और ट्रेड के एक बड़े हिस्से का प्रतिनिडित्वा करते हैं। इसके सदस्य मज़बूत फाइनेंशियल लिंक, पश्चिमी इंस्टीट्यूशन से ज़्यादा आज़ादी और आखिर में एक ऐसा सिस्टम चाहते हैं जो डॉलर के कंट्रोल से बाहर काम कर सके। टैरिफ, बैन और अमेरिकी इकोनॉमिक पॉलिसी को लेकर बढ़ती अनिश्चितता ने इस जरूरत को और महत्वपूर्ण बना दिया है।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र बोड़ा

ओजोन की छतरी के नीचे-कूलर प्लेनेट की ओर बढ़ता राजस्थान

विश्व ओजोन दिवस 2026 ....

डॉ. अमृता कटारा

थीम : "Global Action for a Cooler Planet"

आसमान को देखते हुए हमने शायद ही कभी सोचा हो कि हमारे सिर के ऊपर दिखाई न देने वाली एक परत हमारी पूरी पृथ्वी के लिए कितनी बड़ी ढाल बनी हुई है। वह ढाल है-ओजोन परत। न वह दिखाई देती है, न उसकी कोई आवाज है, न वह हमारे सामने आकर अपने अस्तित्व का अहसास कराती है। फिर भी सूर्य से आने वाली हानिकारक पराबैंगनी किरणों से मनुष्य, जीव-जगत और पर्यावरण की रक्षा में उसकी भूमिका जीवनदायिनी है। प्रकृति ने पृथ्वी को यह सुरक्षा-कवच दिया, लेकिन मानव गतिविधियों ने कभी इसी कवच को कमजोर करने का खतरा भी पैदा किया।

आज 16 सितंबर को विश्व ओजोन दिवस के अवसर पर हम केवल ओजोन परत के संरक्षण की बात नहीं कर रहे, बल्कि उस वैश्विक चेतना का उत्सव मना रहे हैं जिसने विज्ञान, नीति और जनभागीदारी को एक साथ लाकर पर्यावरण संरक्षण की दिशा में इतिहास रचा।

मॉन्ट्रियल से शुरू हुई एक वैश्विक उम्मीद- ओजोन संरक्षण की कहानी हमें वर्ष 1987 के मॉन्ट्रियल तक ले जाती है। 16 सितंबर 1987 को ओजोन परत को नुकसान पहुंचाने वाले पदार्थों को नियंत्रित करने के उद्देश्य से Montreal Protocol on Substances that Deplete the Ozone Layer अपनाया गया। यह समझौता 1 जनवरी 1989 को प्रभावी हुआ। इसके बाद वर्ष 1994 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 16 सितंबर को International Day for the Preservation of the Ozone Layer घोषित किया, ताकि मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल की उस ऐतिहासिक उपलब्धि को याद किया जा सके और विश्व समुदाय को ओजोन संरक्षण के लिए निरंतर प्रयासों की प्रेरणा मिलती रहे।

यानी विश्व ओजोन दिवस की शुरुआत किसी औपचारिक उत्सव के रूप में नहीं, बल्कि मानवता की सामूहिक जिम्मेदारी की याद के रूप में हुई थी। और यही इसकी सबसे खूबसूरत बात है-जब दुनिया ने समस्या को पहचाना, विज्ञान पर भरोसा किया और देशों ने मिलकर समाधान की दिशा में कदम बढ़ाए, तो परिवर्तन संभव हुआ।

2026 का संदेश-सिर्फ ओजोन नहीं, धरती को भी ठंडा करना है। वर्ष 2026 का संदेश इस वैश्विक यात्रा को एक नए आयाम से जोड़ता है-

"Global Action for a Cooler Planet"

अर्थात-एक ठंडी, सुरक्षित और टिकाऊ पृथ्वी के लिए वैश्विक कार्रवाई। इस वर्ष की थीम विशेष रूप से Kigali Amendment to the Montreal Protocol के तहत ustainable cooling के 10 वर्ष पूरे होने को रेखांकित करती है। र्खुंत्त सहसहू को 2016 में अपनाया गया था और इसका उद्देश्य शक्तिशाली ग्रीन हाउस गैस- विशेषकर hydrofluorocarbons (HFCs)-को चरणबद्ध तरीके से कम करना तथा अधिक ऊर्जा-कुशल और टिकाऊ cooling solutions की दिशा में आगे बढ़ना है।

यह संदेश आज के समय में इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि बढ़ती गर्मी, heat wab ने और बदलता जलवायु परिदृश्य हमें यह समझा रहा है कि ठंडक केवल सुविधा नहीं, बल्कि भविष्य की आवश्यकता है। लेकिन सवाल यह है-क्या हमें अपने घरों को ठंडा करने के साथ-साथ अपनी धरती को गर्म करते जाना है? या फिर ऐसी तकनीक, ऐसी जीवनशैली और ऐसा विकास मॉडल अपनाना है जो comfort और climate-दोनों के बीच संतुलन बना सके?

यही 2026 का संदेश है। राजस्थान-जहां हरियाली अब अभियान नहीं, जनभागीदारी का संकल्प है,

राजस्थान जैसे विशाल और विविधतापूर्ण राज्य के लिए पर्यावरण संरक्षण की चुनौती और अवसर दोनों बड़े हैं। मरुस्थलीय भूभाग से लेकर अरावली की पर्वतमालाओं, शहरों से लेकर ग्रामीण अंचलों तक प्रकृति का संतुलन हमारी जीवन-व्यवस्था का आधार है। इसी सोच को जनभागीदारी से जोड़ते हुए राजस्थान सरकार ने 'हरियालो राजस्थान' को व्यापक स्वरूप दिया है। वर्ष 2026-27 में मुख्यमंत्री वृक्षारोपण महाअभियान के माध्यम से हर परिवार को जोड़ते हुए 10 करोड़ पौधे लगाने और उनके संरक्षण का लक्ष्य रखा गया है।

अभियान को Multi-Sectoral Programme के रूप में आगे बढ़ाया जा रहा है, ताकि पौधरोपण केवल एक दिन की गतिविधि न रहे, बल्कि पौधे के वृक्ष बनने तक उसकी जिम्मेदारी भी समाज निभाए। यही सोच इस अभियान को विशेष बनाती है। एक पौधा लगाना प्रकृति के नाम एक वादा है, लेकिन उसे बड़ा करना आने वाली पीढ़ी के नाम जिम्मेदारी। 'एक पेड़ मां के नाम' की संवेदना से लेकर 'एक पेड़ भाई-बहन के नाम' जैसे जनभागीदारी अभियानों तक, हरियालो राजस्थान पर्यावरण को भावनात्मक रिश्तों से जोड़ने का प्रयास भी कर रहा है।

आरएसपीसीबी-नियमन से जन-जागरूकता तक- पर्यावरण संरक्षण की इस यात्रा में राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मंडल की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। जल एवं वायु प्रदूषण की रोकथाम, नियंत्रण एवं न्यूनीकरण के साथ पर्यावरणीय नियमों के क्रियान्वयन की जिम्मेदारी निभाने वाला बोर्ड अब पर्यावरणीय जागरूकता को भी अपनी कार्यप्रणाली का महत्वपूर्ण हिस्सा बना रहा है। वायु गुणवत्ता, औद्योगिक प्रदूषण नियंत्रण, अपशिष्ट प्रबंधन, पर्यावरणीय अनुपालन और जन-जागरूकता जैसे क्षेत्रों में प्रयासों का उद्देश्य यही है कि विकास की गति और पर्यावरण की सुरक्षा एक-दूसरे के विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक बनें।

आज आवश्यकता केवल यह देखने की नहीं कि किसी उद्योग ने मानकों का पालन किया या नहीं। आवश्यकता यह भी है कि समाज का प्रत्येक वर्ग पर्यावरण को अपनी रोजमर्रा की जिम्मेदारी माने। इसीलिए पर्यावरणीय जागरूकता में युवाओं की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण हो जाती है। युवा-जिनके हाथ में सिर्फ मोबाइल नहीं, बदलाव की दिशा भी है।

आज का युवा पर्यावरण को केवल किताबों में पढ़ने वाली पीढ़ी नहीं है। वह क्लाइमेट चेंज को महसूस कर रहा है, बढ़ती गर्मी देख रहा है, बदलते मौसम को समझ रहा है और sustainability जैसे शब्दों को अपनी भाषा का हिस्सा बना रहा है। यही युवा 'ग्रीन राजस्थान' का सबसे मजबूत एंबेसडर बन सकता है।

एक युवा अपने घर msb energy-efficient appliances को प्राथमिकता दे सकता है। अनावश्यक बिजली की खपत कम कर सकता है। सार्वजनिक परिवहन और साझा परिवहन को बढ़ावा दे सकता है। सिंगल यूज प्लास्टिक से दूरी बना सकता है। कचरे को अलग-अलग कर सकता है। पौधा लगाकर केवल फोटो नहीं, उसकी नियमित देखभाल भी कर सकता है। और सबसे महत्वपूर्ण-वह अपने आसपास के लोगों को भी प्रेरित कर सकता है।

आज सोशल मीडिया पर एक पोस्ट कुछ सेकंड में हजारों लोगों तक पहुंचती है। अगर वही पोस्ट किसी ट्रेंड के बजाय tree plantation, clean air, sustainable lifestyle या responsible cooling की बात करे, तो डिजिटल स्पेस भी एनवायर्नमेंटल एक्शन का पावरफुल मंच बन सकता है।

ओजोन दिवस हमें एक बड़ी सीख देता है - ओजोन दिवस की सबसे बड़ी सीख शायद यही है कि पर्यावरणीय संकट अजेय नहीं होते। कभी वैज्ञानिकों ने ओजोन परत में हो रहे क्षरण की चिंता जताई। दुनिया ने सुना। देशों ने समझौता किया। उद्योगों ने तकनीक बदली। नीतियां बनीं। और आज Montreal Protocol को वैश्विक पर्यावरणीय सहयोग की महत्वपूर्ण सफलता के रूप में देखा जाता है। UNEP के अनुसार, इसके कारण ओजोन परत के संरक्षण में उल्लेखनीय प्रगति हुई है और Kigali Amendment ने इस प्रयास को क्लाइमेट एक्शन से भी जोड़ दिया है।

इसलिए आज का संदेश निराशा का नहीं, आशा और कार्रवाई का संदेश है। हमें यह विश्वास रखना होगा कि यदि दुनिया मिलकर आसमान की एक अदृश्य परत को बचाने के लिए अपनी दिशा बदल सकती है, तो हम अपने शहरों की हवा, अपने गांवों की हरियाली और अपनी धरती के तापमान को बेहतर बनाने की दिशा में भी आगे बढ़ सकते हैं। अब पर्यावरण 'विषय' नहीं, जीवनशैली है

आज की पीढ़ी के सामने सबसे बड़ा सवाल यह नहीं है कि हम विकास चाहते हैं या पर्यावरण।

सवाल यह है कि- क्या हम ऐसा विकास कर सकते हैं जिसमें प्रगति की ऊंचाई के साथ प्रकृति की गहराई भी बनी रहे? क्या हमारे शहर स्मार्ट होने के साथ ग्रीन भी हो सकते हैं? क्या हमारी कूलिंग व्यवस्था efficient होने के साथ र्लूहेंत भी हो सकती है? क्या हरियालो राजस्थान में लगाया गया प्रत्येक पौधा आने वाले वर्षों में छाया, स्वच्छ हवा और जैव-विविधता का आधार बन सकता है?

उत्तर है-हां।

लेकिन इसके लिए सरकारी योजनाओं को जनभागीदारी की जरूरत है, तकनीक को जिम्मेदारी की जरूरत है और युवाओं को नेतृत्व की। राजस्थान सरकार के हरियालो राजस्थान जैसे अभियान और राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मंडल के पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषण नियंत्रण के प्रयास तभी व्यापक परिणाम देंगे, जब नागरिक इन्हें केवल सरकारी कार्यक्रम न मानकर अपना अभियान समझेंगे।

एक संकल्प-आने वाले कल के नाम -विश्व ओजोन दिवस 2026 पर आइए, हम केवल ओजोन परत की सुरक्षा की चर्चा न करें, बल्कि उस विचार को अपनी जीवनशैली में उतारें जो हमें एक कूलर, क्लीनर और ग्रीनर प्लेनेट की ओर ले जाता है।

एक पौधा लगाएं। एक पौधे को बचाएं। ऊर्जा की एक अनावश्यक खपत रोकें। प्लास्टिक की एक अनावश्यक वस्तु से इनकार करें। प्रकृति के पक्ष में एक आवाज उठाएं। क्योंकि पर्यावरण को बचाने के लिए हमेशा कोई बहुत बड़ा काम करना जरूरी नहीं होता।

कभी-कभी-एक पौधा, एक बचाई हुई बूंद, एक बंद किया हुआ अनावश्यक स्विच, एक साझा किया हुआ पर्यावरण संदेश-भविष्य की कहानी बदलने की शुरुआत बन सकता है। ओजोन की यह अदृश्य छतरी हमें लगातार यह याद दिलाती है कि प्रकृति हमारे लिए बहुत कुछ करती है, अब हमारी बारी है।

आइए, ओजोन की रक्षा से लेकर हरियालो राजस्थान तक-एक ऐसी पीढ़ी बनें जो केवल भविष्य की कल्पना न करे, बल्कि उसे हरा-भरा, स्वच्छ और सुरक्षित बनाने का साहस भी रखे।

क्योंकि ठंडी धरती केवल एक सपना नहीं-सामूहिक संकल्प और सतत कार्रवाई से हासिल किया जा सकने वाला भविष्य है।

–डॉ. अमृता कटारा,
लेखिका।

स्वदेशी आधारित अर्थ नीति ही समस्या का वास्तविक समाधान

सी.ए. शंकर अग्रवाल

पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक महान चिन्तक, विचारक एवं देश की काल परिस्थिति के भविष्य वक्ता थे। उनके विचार आज भी हमें प्रेरणा देने के साथ-साथ राष्ट्र जीवन में अति उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने स्वदेशी पर जोर देते हुये कहा था कि जब तक हमारा देश स्वावलम्बी व स्वदेश आधारित उत्पाद का उपयोग अपने जीवन में नहीं लायेगा, हम पूर्ण स्वतंत्र नहीं हो सकते। उनका कहना था कि हमारा देश आजाद होने के बाद साम्यवाद व पश्चिम की आर्थिक नीतियां अपनाने पर मजबूर हो गया, क्योंकि हमारे देश के नेताओं व अर्थशास्त्रियों के पास आर्थिक विकास, उत्पादन आदि के लिए स्वयं की नीति नहीं थी, परिणामस्वरूप वर्षों तक हम पश्चिम देशो की नीतियों का अनुसरण करते रहे, जो हमारे देश के आर्थिक स्वास्थ्य के अनुकूल नहीं थी। अधिक उपभोग व अधिक उत्पाद हमारी आर्थिक नीति कभी नहीं बन सकती। उत्पादन बढ़ाना स्वीकार्य है, मगर अनावश्यक उपभोग स्वीकार्य नहीं है।

हमारे देश की आजादी से पूर्व देश में अनेक प्रकार के आंदोलन जैसे- नमक सत्याग्रह, स्वदेशी ग्रामोद्योग, जगल सत्याग्रह, कर बंदी, लगान बंदी, महाराष्ट्र में लोक मान्य तिलक द्वारा पोशित गणपति पूजा, यह सब आंदोलन जनता को एकत्र कर आजादी के आंदोलन के लिए प्रेरित करना व आजादी के आंदोलन में जनता की भागीदारी बढ़े, इसके मूल में यही भावना छिपी थी।

आजादी के बाद इन सब प्रश्नों को आर्थिक दृष्टिकोण से देखा गया, देश की प्रगति, आर्थिक योजना, बड़े उद्योगों का निर्माण एवं उत्पादन यह हमारी सोच का मूल आधार हो गया। विषय वही थे पर नजरिया बदल गया।

आजादी के बाद आर्थिक विकास पर ज्यादा जोर दिया जाने लगा। हमारे पास अपना कोई आधार नहीं था अथवा होने के बाद भी हमारी आर्थिक नीतियों में मार्शल और मार्क्स का प्रभाव दिखाई देने लगा। पश्चिम की आर्थिक समृद्धि ने उसकी अर्थोत्पादन पद्धति के विषय में हमारे मन में निरविवाद रूप से श्रृद्धा उत्पन्न कर दी है। पाश्चात्य अर्थशास्त्रियों ने इतना विवेचनात्मक साहित्य उत्पन्न किया है कि उसने भीतर से हम सहज ही दब जाते हैं, उसके ऊपर उठ ही नहीं पाते हैं।

आजादी के बाद पाश्चात्य अर्थशास्त्रियों ने हमारी अर्थव्यवस्था को बुरी तरह से घेर लिया, वे सब हमारे देश के होते हुए भी विदेशों के लिए काम करते थे। परिणामस्वरूप हमारी अर्थव्यवस्था विदेशी प्रतिनिधियों अथवा पश्चिम देशों के लिए काम करने वाले तथाकथित अर्थशास्त्रियों के बीच जकड़ गई। उन्हीं के दर्शन को हम हमारी आर्थिक प्रगति का आधार मान बैठे। आज भी इस सोच के कम लोग होने के बाद भी इनका प्रभाव कम नहीं है। आज के संदर्भ में बात करें तो इनका प्रभाव काफी कम हो गया है, लेकिन लम्बे समय देश इन्हीं के दर्शन का अनुसरण कर अपनी आर्थिक नीतियां निर्धारण करता रहा। परिणाम स्वरूप हम स्वावलम्बन व स्वदेश आधारित अर्थव्यवस्था से दूर होते गये।

वर्तमान युग में आर्थिक समस्या अत्यंत विषम हो उठी है। इस समस्या को हल करने के विविध प्रकार पश्चिम के विद्वानों ने रखे हैं। किंतु इन सभी का दृष्टिकोण एकांगी ही रहा है। लाभ में जब श्रमिकों को भाग नहीं मिला, तब उनमें प्रतिक्रिया उत्पन्न हुई और उन्होंने एक नई प्रणाली समाजवाद या साम्यवाद का विकास किया, जिसमें पुनः वितरण पर ही अधिक बल दिया गया और इसके लिये राज्य द्वारा व्यक्ति को कुचलकर रख दिया गया।

लेकिन उपभोग की ओर पश्चिम के विद्वानों का ध्यान नहीं गया, यद्यिप उपभोग ही उत्पादन और वितरण दोनों की धुरी है। वास्तविकता यह है कि अधिकाधिक उपभोग का सिद्धांत ही मनुष्य के दुःखो का कारण है। उपभोग की लालसा यदि पूरी की जाए तो वह बढ़ती चली जाती है। वर्ग संघर्ष जिसके ऊपर समूचा साम्यवाद खड़ा है, ऐसे उपभोग के ही कारण उत्पन्न होता है। भारतीय मतवाद जब वर्ग-संघर्ष का खंडन करता है, तब उसका तात्पर्य यही होता है कि उसने उपभोग को नियंत्रित कर लिया है तथा अधिकाधिक उपभोग के बजाय न्यूनतम उपभोग को आदर्श बनाया है। मनुष्य की प्रकृत भावनाओं का संस्कार करके उसमें अधिकाधिक उत्पादन, समान वितरण तथा संयमित उपभोग की प्रवृत्ति पैदा करना ही आर्थिक क्षेत्र में संस्कृति का कार्य है। इसमें ही तीनों का संतुलन है।

दीनदयाल जी की सोच थी, जब तक स्वदेशी व स्वावलम्बी अर्थव्यवस्था नहीं होगी, हम आजीवन किसी न किसी रूप में गुलाम ही रहेगें। उनका कहना था कि हिन्दु जीवन दर्शन ही पूर्ण है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरूशार्थ पर आधारित हिंदू जीवनादर्श ही हमें इस संकट से उबार सकता है। विश्व की समस्याओं का उत्तर समाजवाद नहीं, हिंदुत्ववाद है। यहां पर हमें हिंदू जीवनादर्शों का विचार करते समय कुछ निष्प्राण कर्मकांड के साथ नहीं जोड़ना चाहिए। साथ ही यह समझना भी भारी भूल होगी कि हिंदुत्व वर्तमान वैज्ञानिक उन्नति का विरोधी है। विज्ञान और यंत्र इन दोनों का उपयोग इस पद्धति से होना चाहिए, जिससे वे हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन-पद्धति के अनुरूप हो। एक ऐसी व्यवस्था चाहिए, जो संहारात्मक न होकर सृजनात्मक हो-प्रकृति के षोशण पर निर्भर न होकर पोषण पर निर्भर रहें। पंडित जी की सोच थी प्रकृति का षोषण नहीं दोहन होना चाहिए। हम प्रकृति से इतना तथा इस प्रकार लें कि वह उस कमी को स्वयं पुनः पूरित कर ले। भूमि से अधिक फसल लेने के लोभ में हम ऐसे उर्वरकों का प्रयोग कर रहे है, जिनसे कुछ दिनों बाद उसकी उत्पादन शक्ति समाप्त हो जाती है। आज अमरीका में लाखों एकड़ भूमि इस प्रकार की खेती के कारण बंजर हो चुकी है। यह विनाशलीला कब तक चलती रहेगी? इसका समाधान केवल हिन्दू दर्शन में ही निहित है।

पंडित दीनदयाल जी की सोच को राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री स्व. भैरोंसिंह शेखावत ने प्रथम बार राजस्थान में अपनाया व अन्त्योदय योजना लागू कर पूरे विश्व को उस योजना का अनुसरण करने को विवश कर दिया। अन्त्योदय का अर्थ था गांव के अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति को सरकारी योजनाओं का लाभ मिले। इस योजना का अमेरीका सहित अनेक देशों ने अनुसरण किया। राजस्थान देश का पहला राज्य बना, जहां गांव के अंतिम व्यक्ति तक लाभ की कल्पना की व उसे साकार करने के लिये अनेक योजनाऐं बनाई। सरकारी योजना का सीधा लाभ गरीब को मिले, इस हेतु अनेक लाभकारी योजना गरीब को गणेश मानकर लागू की गई।

दीनदयाल जी की इसी स्वदेशी सोच को साकार करने का कार्य प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कर रहे हैं, जिन्होंने हर क्षेत्र में स्वदेशी को बढ़ावा देने पर जोर दिया व छोटे उद्योगों, दस्तकारो, हस्तकला आदि को बढ़ावा देने के साथ-साथ उन क्षेत्रों में भी भारी उपलब्धि हासिल की है, जिन पर कोई सोचता ही नहीं था। सबसे बडा उदाहरण हमारे सामने रक्षा उत्पाद का है, जहां हम निर्यात करना तो दूर हर तरह के हथियार के लिये विदेशो पर निर्भर रहते थे। आज हम रक्षा क्षेत्र में आत्म निर्भरता की तरफ कदम बढ़ा रहे है व हमारा निर्यात 38424 करोड़ का हो गया है जो कभी 180 करोड़ भी नहीं था। आज हमारे रक्षा उत्पाद को अनेक देश पसन्द कर रहे हैं। इसी प्रकार मोबाईल जो हमेशा बाहर से आता था, आज हम 2.59 लाख करोड़ के मोबाईल निर्यात कर रहे हैं।

आज देश में 6.27 करोड़ का मोबाईल उत्पादन अपने आप में स्वदेश उत्पाद की दिशा में बड़ा कदम है। यह तो दो बड़े क्षेत्र है जिनका विस्तार से वर्णन किया है। इसके अलावा अनेक क्षेत्रों में भारत आत्मनिर्भर होता जा रहा है। आज स्वदेशी उत्पादन को बढ़ावा देने की इस मुहिम में शामिल होकर हम पंडित दीनदयाल जी को सच्ची श्रृद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं।

- सी.ए. शंकर अग्रवाल

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 16 सितम्बर, 2026

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, पंचमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत-2083, विशाखा नक्षत्र सायं 5:23 तक, चन्द्रमा आज प्रातः 10:49 से वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-तुला, मंगल-मिथुन, बुध-कन्या, गुरू-कर्क, शुक्र-तुला, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह।

आज कुमार योग सायं 5:13 तक है। अमृत सिद्धि योग सायं 5:23 से सूर्योदय तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग और रवियोग सायं 5:23 से आरम्भ होगा। आज वैधृति पुण्यं, मथन षष्ठी है।

श्रेष्ठ चौघड़िया–लाभ अमृत सूर्योदय से 9:14 तक, शुभ 10:50 से 12:12 तक, चर 3:25 से 4:56 तक, लाभ 4:56 से सूर्यास्त तक।

राहुकाल–12:00 से 1:30 तक, सूर्योदय 6:16 सूर्यास्त 6:26 तक

मेष
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को दिन के मध्यान्ह पूर्व करने का प्रयास करें। दिन के मध्यान्ह पश्चात चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है।

वृष
मित्रों-रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद दूर होने लगेंगे। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। दुस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/ आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कर्क
घर-परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी।

सिंह
शुभ कार्यों के लिए यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

तुला
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

वृश्चिक
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय दूर होगा। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
परिजनों के व्यवहार के कारण दुःख हो सकता है। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मकर
घर-परिवार में चल रहे आपसी मतभेद दूर होने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में महत्वपूर्ण वार्ता हो सकती है और महत्वपूर्ण योजना बन सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

मीन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।